ईश्वरप्राप्ति हेतु साधना : खण्ड ३

अध्यात्म का प्रस्तावनात्मक विवेचन

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अप्रैल २०२४ तक ३६५ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९६ लाख ५४ सहस्र प्रतियां !

卐 सनातन की गुरुपरम्परा 卐

प.पू. भक्तराज महाराजजी, इंदौर, मध्य प्रदेश.

डॉ. आठवलेजी के गुरु एवं सनातन संस्था के श्रद्धास्रोत

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी

सनातन संस्था के संस्थापक

श्रीसत्‌शक्ति

(श्रीमती) बिंदा सिंगबाळजी

श्रीचित्‌शक्ति

(श्रीमती) अंजली गाडगीळजी

(सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी की आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणियां)

ग्रन्थके संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी के आध्यात्मिक शोधकार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से १५.५.२०२४ तक १२७ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५८ साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापना की उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका मार्गदर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले

१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन की ग्रन्थ-रचना की सेवा करने के साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्री के (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात' में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(अध्यायों के विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए हैं ।)

अध्याय १. संस्था, संस्थापक एवं संस्था द्वारा अध्यात्मप्रसार करने का उद्देश्य ९

१ इ. वक्ता : अध्यात्मप्रसार की ओर हमारे आकर्षित होने के कारण ११

अध्याय २. अध्यात्म (अर्थ, महत्त्व, विज्ञान की तुलना में श्रेष्ठ एवं अनुचित धारणाएं) १४

२ अ. विषय क्या है एवं उसका महत्त्व क्या है ? १४

२ अ १. प्राणियों का ध्येय - चिरन्तन एवं सर्वोच्च आनन्द की प्राप्ति १४

२ अ २. मनुष्य का पुनः-पुनः जन्म होने के कारण १४

२ अ ३. मनुष्य का जीवन एवं सुख-दुःख १४

२ अ ७. विज्ञान एवं अध्यात्मशास्त्र १७

२ अ ८. नास्तिकता २०

२ अ ९. निरर्थक बुद्धिवाद २०

२ अ ११. चार्वाक तत्त्वज्ञान २४

अध्याय ३. संस्था द्वारा आयोजित सत्संग का स्वरूप व विशेषताएं २५

३ अ. विषय कैसे प्रस्तुत किया जाएगा ? २५

३ आ २. सत्संग में कब तक आते रहना चाहिए ? ३२

अध्याय ४. साधना : अर्थ, महत्त्व एवं प्रकार ३८

अध्याय ५. साधना के लिए आवश्यक गुण ४२

५ इ. बुद्धि की 'बाधा' को दूर करना ४८

अध्याय ६. साधना का मूलभूत सिद्धान्त व साधना के मुख्य नियम ५०

अध्याय ७. साधना करते समय कौनसी चूकें टालें ? ६४

७ अ. गुरु ढूंढना ७ आ. सांप्रदायिक साधना में अटकना ६४

अध्याय ८. अष्टांग साधना ६५

८ अ. अष्टांग साधना के चरणों का मानदण्ड साधक की गुणवत्तापर निर्भर होना ६५

८ आ. अष्टांग साधना के सूत्र ६६

अध्याय ९. साधना से सम्बन्धित कुछ कृत्यों संबंधी उचित दृष्टिकोण ९५

अध्याय १०. साधना सम्बन्धी अन्य मार्गदर्शन ९७

अध्याय ११. साधना का फल : आध्यात्मिक उन्नति १०२

अध्याय १२. समापन १०३

अध्याय १३. उपसंहार (सारांश) १०४

*** परिशिष्ट** १०६

*** प्रस्तुत ग्रन्थ की असामान्यता समझ लें !** १०८

टिप्पणी - 'अध्यात्म' विषय पर किसी को प्रस्तावनात्मक विवेचन करना हो, तो उसे इस प्रवचन में 'कौनसे सूत्र बताएं ?', यह समझने हेतु ग्रन्थ में लेखन का वह भाग खडी रेखा से दर्शाया है ।

यह ग्रंथ 'ई-बुक' स्वरूप में उपलब्ध ! : Sanatanshop.com/ebooks

भूमिका

सनातन संस्था की ओर से अनेक साधक विभिन्न स्थानों पर अपनी साधना के रूप में प्रवचन एवं सत्संग करते हैं । उनके लिए यह निश्चित करना कठिन हो जाता है कि प्रथम प्रवचन में तथा प्रथम सत्संग में अध्यात्म जैसे अथाह विषय के सन्दर्भ में क्या बताना है । उनकी सुविधा के लिए यह ग्रन्थ लिखा गया है । ऐसे प्रवचन एवं साप्ताहिक सत्संग में जो उपस्थित नहीं हो सकते, उन्हें भी इस ग्रन्थ से लाभ होगा ।

धर्मशास्त्र में बताई गई सहस्रों साधनाओं में से कौनसी साधना वर्तमान काल के लिए उपयुक्त है, इसकी निश्चित जानकारी अनेक लोगों को नहीं होती । प्रत्यक्ष साधना न करनेवालों को 'अध्यात्म' विषय के श्रवणमात्र से तथा अनुचित साधना करनेवालों को भी कोई लाभ नहीं होता । इसके विपरीत ऐसी साधना से अनुभूति भी नहीं होती, जिससे अध्यात्म के प्रति विश्वास भी न्यून होने लगता है । देवालयों में कीर्तन-प्रवचनों के लिए जानेवाले अधिकांश लोगों को लगता है कि वे साधना कर रहे हैं । धार्मिक पुस्तकों का वाचन एवं अध्ययन करनेवालों को भी लगता है कि वे अध्यात्म के विषय में थोडा-बहुत जानते हैं । इन दोनों प्रकार के लोगों की यह धारणा अधिकांशतः वास्तविक नहीं होती । लोग अधिकतर अपना समय व्यतीत करने अथवा रुचि के लिए कीर्तन एवं प्रवचनों में जाते हैं अथवा पुस्तकों का वाचन करते हैं । उनकी यथार्थ साधना नहीं होती । साधना का निश्चित अर्थ क्या है एवं उचित साधना कैसे करें, यह सर्वज्ञात होने हेतु सनातन संस्था द्वारा प्रवचन एवं सत्संग आयोजित किए जाते हैं ।

प्रत्येक प्रवचन एक से डेढ घण्टे का होता है । इस ग्रन्थ में सत्संग के विचारसे ही विषय प्रस्तुत किया गया है । इसमें से कौनसा भाग प्रवचन में समाविष्ट करना है, यह समझने के लिए उस भाग के पार्श्व में एक लम्बी सीधी रेखा खींची गई है । एक से डेढ घण्टे के साप्ताहिक सत्संग में इस ग्रन्थ का कुछ भाग सिखाया जा सकता है । ग्रन्थ पूर्ण

सिखाने के पश्चात, सनातन के विविध ग्रन्थों में प्रस्तुत विषयों को आगे के सत्संगों एवं प्रवचनों में क्रमानुसार सिखाया जाता है ।

नासिक के प.पू. बेजन न. देसाईजी द्वारा ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद को पढकर दिए गए सुझाव एवं आशीर्वाद के लिए हम उनके ऋणी हैं ।

इस ग्रन्थ में बताई गई साधना समझकर, कुछ लोगों की तो प्रत्यक्ष साधना आरम्भ हो, यही श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है । – **संकलनकर्ता**

('अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमाला की संयुक्त भूमिका 'धर्म का मूलभूत विवेचन' ग्रन्थ में दी है ।)

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी की उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

महान महर्षियों ने सहस्रों वर्ष पहले नाडीपट्टिकाओं में भविष्य लिख रखा है । इन जीवनाडी-पट्टिकाओं के वाचन के माध्यम से महर्षि सनातन संस्था का मार्गदर्शन करते हैं । '१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडी-पट्टिका' के वाचन के माध्यम से सप्तर्षि की आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी को 'सच्चिदानंद परब्रह्म' सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहले के लेखन में अथवा अब भी साधकों द्वारा दिए लेखन में उन्होंने 'प.पू.' अथवा 'परात्पर गुरु' की उपाधियों से सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की उत्तराधिकारिणियों की उपाधि सम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचन द्वारा सप्तर्षि ने की आज्ञा के अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी को 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी को 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है ।